अपरिग्रह विश्व अर्थव्यवस्था में

नाम: मोनिका महेन्द्रभाइ हाजी
शोधछात्र(प्राकृत पाली विभाग)
गुजरात युनिवर्सिटी, अमदावाद)
jhaveri.monika@gmail.com

परिग्रह का सामान्य अर्थ होता है स्वीकारना, ग्रहण करना। मूर्छा से या ममत्व से किसी भी चीज़ का ग्रहण करना या संग्रह करना **परिग्रह** कहलाता है[1]। शास्त्रों में दो प्रकार के परिग्रह बताए है, बाह्यपरिग्रह और अभ्यंतर परिग्रह। धन-धान्य, क्षेत्र-वास्तु, हिरण्य-सुवर्ण, दास-दासी, द्विपद, चतुष्पद आदि बाह्य परिग्रह हैं। क्रोध आदि चार कषाय, तीन वेद, छह नोकषायआदि अभ्यंतर परिग्रह हैं। ये आत्मा के स्वभाव नहीं पर परभाव है, परभाव का संग्रह करना ही परिग्रह है। अभ्यंतर परिग्रह रूपी सर्वे भाव जीव को भौतिक पदार्थों की और आकर्षित करते हैं। वे सुखदायक हैं ऐसा भ्रम उत्पन्न करते हैं। यही भ्रम के कारण जीव भौतिक पदार्थों का संग्रह करता हैं।

दुनिया में सभी लोग मानते है कि इस धन-संपत्ति से सुख के साधन प्राप्त हो सकते हैं। उसी से दुनिया में मान प्रतिष्ठा मिल सकती है। देह की कोई भी तकलीफ़ का उपाय धन से हो सकता हैं। इसी सोच से वह धन, धान्य आदि भौतिक चीज़ों का संग्रह करता है। इसी चीज़ों के लिए जीव हिंसा, झूठ, फ़रेब, चोरी आदि अनेक पापों करके दुर्गति का भाजन बन जाता है।

अपरिग्रह मतलब जीवन की आवश्यकताओं को सीमित करना, संग्रह को सीमित करना,वस्तु पर से मूर्छा ममत्व को हटाना। अपरिग्रह की भावना का अनुसरण करने वाला जीव हिंसा, द्वेष, चोरी आदि दोषों से मुक्त रहेगा। वह सत्यवादी,भयहीन, परोपकारी,अदीन गुणधारी होगा। अपरिग्रह से अहिंसा स्वयमेव फलित होती है। अपरिग्रह से लोभ नहीं होगा और इससे द्वेष भी उत्पन्न नहीं होगा फिर हिंसा के जन्म का तो प्रश्न ही नहीं होगा।

आज के विश्व में अपरिग्रह की नितांत आवश्यकता है। विज्ञान की अनेक उपलब्धियां मनुष्य को परिग्रह के अंधे कूप में डुबा ले जाती है। परिग्रह की प्रवृत्ति दुनिया में राग-द्वेष ,शक्ति-संचय, शस्त्र-संग्रह के रूप में यत्रतत्र सर्वत्र प्रकट हो रही है। ऐसी भयावह स्थिति में अपरिग्रह का जीवनमूल्य ही हमें अशांति और सामाजिक विघटन से बचा सकता हैं। आज ग़रीबों और अमीरों के बीच असमानता बढ़ती जा रही है तब सामाजिक समानता की परिकल्पना अपरिग्रह से ही साकार हो सकती हैं।

दुनिया में मूल रूप से तीन व्यापक व्यवस्थाएँ हैं। पूंजीवाद, साम्यवाद और समाजवाद। समाजवाद निम्न परिग्रह और सामाजिक न्याय पर आधारित है। यह उचित लाभ की अनुमति देने पर केंद्रित है ताकि कंपनी जरूरत आधारित पूंजी जुटा सके और निवेशकों को उचित रिटर्न प्रदान कर सके और साथ ही विनिर्माण और अनुसंधान क्षमताओं को बेहतरीन करने में निवेश कर सके।

पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में आज धन को अधिकतम करने की होड़ में, कॉर्पोरेट छोटे व्यवसायों को खत्म कर रहे है। जो ग्रामीण पारिस्थितिकी तंत्र को बनाए रखने में मददगार थे। उदाहरण के लिए, अमेज़न ने कई छोटे व्यवसायों को खत्म कर दिया है - किताबों की दुकानें, किराना की दुकानें,कपड़े की दुकानें और ऐसी ही कई और दुकानें हैं। अमेज़न के पास पूँजी है इसलिए वे अल्पावधि में घाटे में बेच सकते हैं और एक बार ये दुकानें बंद हो जाने पर वे लाभ में बेच सकते हैं। इसके अलावा, अमेज़न निर्माताओं को अपने विस्तार के कारण छूट पर बेचने के लिए मजबूर करने की कोशिश करता है। इस परिस्थिति में छोटे निर्माताओं का नफा का मार्जिन कम होता जाएगा और इससे विकास भी प्रभावित होगा। संस्थापक पूंजीवादी होंगे तो वह समाज में असमानता पैदा करेंगे।

दूसरी ओर, अमूल जैसी सहकारी समिति बिना किसी लाभ से ही काम करती है और देश की कृषि अर्थव्यवस्था में योगदान करती है। जो ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मज़बूत करता हैं। हमें नई तकनीकी को अपनाने के साथ उन्हें नवीनीकरण और समाज में

[1] "मूर्छा परिग्रहः।"उमास्वाति, श्री तत्त्वार्थाधिगम सूत्र, ७/१२

योगदान के आधार पर लाभ कमा देने की ज़रूरत है। 'उबर' एक ऐसा ही उदाहरण है जहाँ यह वास्तव में समाज को लाभ पहुँचाता है। यहाँ धन का ध्रुवीकरण नहीं होता पर छोटे-छोटे लोगों को भी पैसे कमाकर स्वावलंबी बनने एक आधार, सहारा और सुविधा प्राप्त होती हैं।

उदाहरण देखें तो सहकारी कंपनी जैसे कि बैंक उपभोक्ता फर्म हैं। यदि ये फर्म परिग्रह या उच्च मार्जिन पर ध्यान केंद्रित करती है, तो वह समाज की मदद नहीं बल्कि असमानता की चुनौती खड़ी करती हैं। निजी कंपनियों जैसे हिंदुस्तान लीवर, नेस्ले, पेप्सी, तंबाकू आदि अपने उपभोक्ताओं के स्वास्थ्य की चिंता किए बिना धन के लिए स्वस्थ खाने-पीने की आदतों को बदलने की कोशिश करती हैं। जो लोगों के स्वास्थ्य के लिए ख़तरनाक बन सकता हैं। वैसी ही स्थिति धातु और खनन फर्म से हैं जो पर्यावरण की परवाह किये बिना हवा और पानी को प्रदूषित करते है, जो देश के लिए ही नहीं पर दुनिया के लिये भी हानिकारक है।

पूंजीवाद की एक समस्या श्रम बाज़ार को भी चुनौती देती हैं , जहाँ नियोक्ताओं को ९ से ९, बारह घंटे काम करना पड़ता हैं। जिससे पारिवारिक मूल्यों, स्वास्थ्य आदि पर भी प्रभाव पड़ता हैं। जो समयांतर पर समाज को ही प्रभावित करता हैं।

आज दुनिया में चारों ओर युद्ध का माहौल देखने को मिलता हैं। युक्रेन पर क़ब्ज़ा जमाने रुस, गाजापट्टी के लिए इज़रायल, बलूचिस्तान के लिए पाकिस्तान सभी अपने विस्तार जमाने के लिए संघर्ष करते हैं। पूंजीवादी अमेरिका भारत पर टैरिफ़ बढ़ा कर व्यापारिक संतुलन को कमज़ोर करता है। भारतीय अर्थव्यवस्था को मज़बूत बनाने के लिए प्रधानमंत्री ने 'मेक इन इंडिया' का नारा दिया है। जो देश को स्वावलंबी बनाने के लिये एक अभियान है। जिसका मूल अपरिग्रह ही है। स्वदेशी चीजों के उपयोग से देश का धन बहार जाने से बच जाएगा, देश विकास के पथ पर आगे बढ़ेगा, स्वावलंबी बनेगा। रोज़गार बढ़ेगा और सामाजिक असमानता भी कम होगी।

अपरिग्रह से संतोष और संतोष से मन की शांति प्राप्त होगी। जिसकी ज़रूरत कम होती है, वही समाज में मस्तिष्क ऊँचा रखकर अपने जीवन को सार्थक कर सकता है। किसी फ़िल्म का डायलॉग है कि "मेरी ज़रूरतें कम हैं, इसलिए मेरे ज़मीर में दम है"। किसी महात्मा ने भी कहा है कि "जितनी ज़रूरत कम उतना सुख ज़्यादा।"

अगर हम सिर्फ़ अपना न सोचकर अपने से आगे सोचेंगे तो 'मैं' से आगे 'हम' आएगा, हम के साथ फिर 'कुटुंब' की भी गिनती होगी। सिर्फ़ अपने लिए पदार्थों का संचय नहीं होगा। दृष्टि खुलेगी तो कुटुम और समाज के आगे ग्राम, नगर, देश के बारे में भी सब सोचने लगेंगे। देश की भी सीमा खुल जाएगी, तो सारा विश्व एक लगेगा और "वसुधैव कुटुंबकम्" की भावना कल्पना से वास्तविक हो पाएगी।